राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक अध्ययन

मीनाक्षी वर्मा
पूर्व एम0 एड0 छात्रा, आर0 एस0 डी0 एकेडमी, मुरादाबाद

सारांश

भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को 29 जुलाई 2020 को पूर्व इसरो प्रमुख कस्तूरीरंगन जी की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा परिणत किया गया जिसने 34 वर्ष पुरानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का स्थान ग्रहण किया। इस 34 वर्ष के लंबे अंतराल में देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक आदि विभिन्न पक्षों में व्यापक परिवर्तन आया है जिस को ध्यान में रखकर ही इस नवीन शिक्षा नीति का निर्माण किया गया है जो देश को उन्नत एवं आत्मनिर्भर भारत की ओर अग्रसारित करने में सार्थक सिद्ध हो। चूँकि भारत विविधताओं का देश है इसलिए देश की आकांक्षाओं के अनुरूप सिद्ध होना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के समक्ष चुनौतीपूर्ण है। प्रस्तुत शोध लेख में शोधकर्त्री ने विषय वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताओं एवं चुनौतियों को सुव्यवस्थित एवं संगठित रूप में प्रस्तुत किया है।

संकेत शब्द *– व्यावसायिक पाठयक्रम, एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट, तकनीकी आधारित शिक्षा।*

प्रस्तावना :–

सर्व विदित है कि किसी भी राष्ट्र का विकास उसकी शिक्षा नीति पर निर्भर करता है इसलिए भारत जैसे विकासशील देश में संगठित एवं सार्थक शिक्षा नीति अत्यंत आवश्यक है। भारत एक लंबे समय तक अंग्रेजों का गुलाम रहा इसलिये भारतीय शिक्षा पर विदेशी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है परंतु आधुनिक शिक्षाविदों एवं देश के विभिन्न विद्वानों ने भारतीय शिक्षा के भारतीयकरण पर सदैव बल दिया है जिसकी पुष्टि नवीन शिक्षा नीति में भी स्पष्ट दिखाई देती है। भारत विविधताओं का देश है इसलिए शिक्षा को भारतीय संस्कृति से जोड़कर,रोजगार परक एवं तकनीकी आधारित शिक्षा तंत्र को विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। इस नवीन शिक्षा नीति में भारत में प्रचलित पुरानी शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन किए हैं जोकि सांवैधानिक मूल्य एवं आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप भारत को आत्मनिर्भर एवं विकसित राष्ट्र के पथ पर अग्रसारित करने में सफल सिद्ध हो सके।

प्रस्तुत शोध लेख में निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विशेषताएं एवं चुनौतियों को प्रस्तुत किया है–

1) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताएं

2) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की आवश्यकता

3) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की चुनौतियां

4) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रासंगिकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताएं

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रगतिशील, समृद्ध, सृजनशील एवं नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण भारत की कल्पना करती है जिसका अपना एक गौरवशाली इतिहास है। शिक्षा नीति की प्रमुख विशेषताएं निम्न प्रकार है–

1– शिक्षा में 10+2 पैटर्न के स्थान पर 5+3+3+4 पैटर्न को विद्यालयी शिक्षा में लागू करना
2– विद्यालय में कक्षा 6 से व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को प्रारंभ करना
3– त्रिभाषा फार्मूले को शिक्षा में लागू करना
4– शिक्षा में भारतीय एवं मातृभाषा पर बल देना
5– उच्च शिक्षा में क्रेडिट सिस्टम को लागू करना
6– शिक्षा में मल्टीपल एंट्री मल्टीपल एग्जिट को उपलब्ध करना
7– शोध की गुणवत्ता पर बल देना
8– विद्यार्थियों को कोई भी विषय चुनने की स्वतंत्रता प्रदान करना
9– 4 वर्षीय स्नाताक स्तरीय पाठ्यक्रम को प्रारंभ करना
10– कला, संगीत, खेलकूद एवं योग आदि विषय को मुख्य सिलेबस से जोड़ना
11– एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट की स्थापना करना
12– बजट में शिक्षा हेतु जीडीपी का 6 प्रतिशत आवंटन का उपबंध
13– 3 से 6 वर्ष तक आयु के बच्चों हेतु आंगनवाड़ी, बाल वाटिका, प्रीस्कूल के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
14– शिक्षा को बहू विषयक बनाना
15– मॉडल सार्वजनिक विश्वविद्यालय की स्थापना करना
16– तकनीकी आधारित शिक्षा उपलब्ध कराना
17– शिक्षा को बाल केंद्रित करना
18– व्यवहारिक एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना
19– शोध एवं सामुदायिक भागीदारी के साथ स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम उपलब्ध कराना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की आवश्यकता–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्वतंत्र भारत की 1968, 1986 के उपरांत निर्मिति तीसरी शिक्षा नीति है जो 34 वर्ष से प्रचलित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का स्थान लेगी। आजादी के समय भारत की साक्षरता दर लगभग 12 प्रतिशत थी जो वर्तमान में लगभग 74 प्रतिशत है इसके अतिरिक्त आज भारत के सामाजिक एवं आर्थिक तानेबाने में भी व्यापक परिवर्तन आया है, भारत ग्रामीण परिवेश से शहरीकरण एवं औद्योगिकरण की ओर तेजी से बढ़ रहा है इसलिए देश को एक सार्थक एवं प्रगतिशील दिशा देने हेतु एक मजबूत शिक्षा नीति अपरिहार्य है जो देश को भारतीय संस्कृति से जोड़कर भारत को आत्मनिर्भर भारत के रूप में परिणत करने में सफल सिद्ध हो सके। भारत में पूर्व में चलित शिक्षा प्रणाली मूल रूप से सीखने और परिणाम पर मुख्य रूप से केंद्रित थी जिसमें विद्यार्थियों का आकलन प्राप्त अंकों के आधार पर किया जाता था। इस प्रकार यह विकास के लिए एकल दिशा वाला दृष्टिकोण के रूप में विद्यमान थी लेकिन नई शिक्षा नीति एक बहू विषयक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता पर केंद्रित है जिसका उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। नई शिक्षा नीति नवीन पाठ्यक्रम और शिक्षा की सुसंगठित संरचना की कल्पना करती है छात्रों को सीखने के विभिन्न चरणों में सहायक सिद्ध होगी।

ज्ञान के इस वर्तमान युग में शिक्षा, शोध और नवाचार महत्वपूर्ण है जिसे" एक भारत श्रेष्ठ भारत" की भावना का सम्मान करते हुए नई शिक्षा नीति में संस्कृत सहित अन्य भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने की व्यवस्था को सम्मिलित किया गया है। 34 वर्षों के बाद भारतीय परिवेश में आई नवीन शिक्षा नीति का कार्य

भारतीय शिक्षा को अधिक गतिशील, लोचनीय एवं प्रासंगिक बनाना है। यह शिक्षा नीति विद्यालय शिक्षा के साथ–साथ उच्च शिक्षा में भी व्यापक परिवर्तन करती है जिसका प्रमुख उद्देश्य शिक्षा के भारतीयकरण के साथ भारतीय मूल्य एवं संस्कृति आधारित शिक्षा तंत्र का निर्माण करना है जो सार्थक मानव पूंजी का निर्माण करने में सफल सिद्ध हो सके।

भारत पर लंबे समय तक अंग्रेजों ने शासन किया इसलिए इसकी शिक्षा व्यवस्था में विदेशी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है जबकि यह सर्वविदित है कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए उसकी शिक्षा नीति स्वदेश की आवश्यकता एवं देश के नागरिकों के परिवेश के अनुरूप हो तभी वे शिक्षा नीति सफलतापूर्वक कार्य कर सकती है। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति को भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों से जोड़ने के लिए इस शिक्षा नीति को महत्वपूर्ण माना गया है जो भारतीयों को अपने गौरवशाली इतिहास से जोड़ने का भी काम करेगी। देश को पूंजी के विकास हेतु कुशल नागरिकों की आवश्यकता है अतः शिक्षा को कौशल पर बनाने हेतु एक ऐसी शिक्षा नीति की आवश्यकता थी जो रोजगार प्रशिक्षण उपलब्ध करा सके इसलिए शिक्षा नीति में कक्षा 6 से व्यवसायिक पाठ्यक्रमों को लागू किया गया है। आधुनिक मानव मूल्यों के प्रति उदासीन है इसलिये उसमें उचित मूल्यों के विकास हेतु गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना अनिवार्य है। भारत अपने गौरवशाली इतिहास को जनजन तक पहुॅचाना चाहता है जिससे देश में राष्ट्रप्रेम एवं एकता का विकास हो इसलिये भारतीय मूल्यों एवं आदर्शो पर आधारित शिक्षा तंत्र अपरिहार्य है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के समक्ष चुनौतियां –

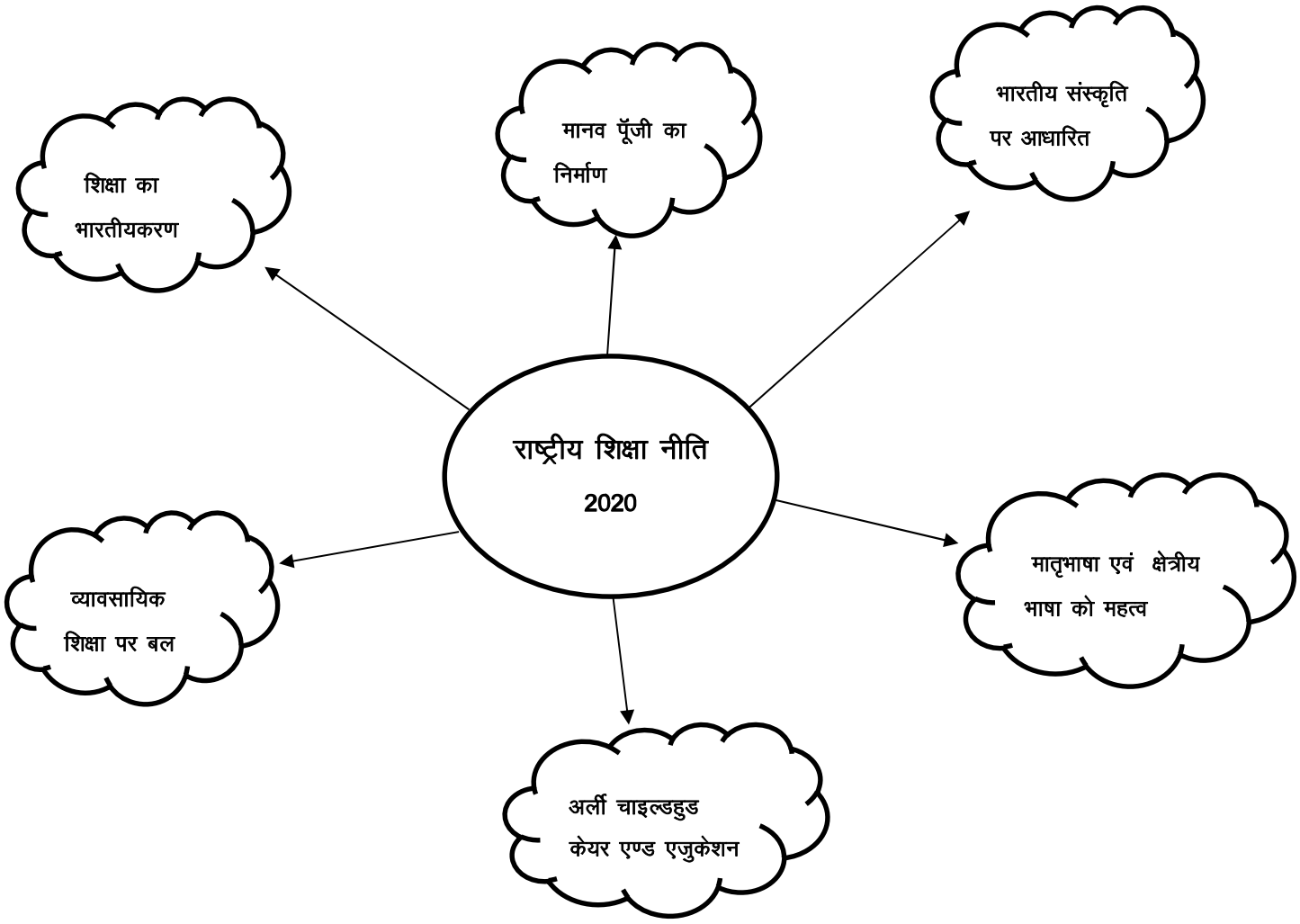
स्वतंत्रता के पश्चात राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 व 1992 में संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा तक पहुॅच बनाना था। इसके बाद शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 ने शिक्षा की अनिवार्यता पर बल दिया। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वजनिक पहुॅच बनाना है जो आत्म–निर्भर व उन्नत भारत एवं सतत विकास के क्रम में भारतीय संस्कृति को समृद्ध करें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जिसका क्रियान्वयन सत्र 2021–22 से किया जा रहा है उसके समक्ष भारत जैसे विशाल देश में विभिन्न समस्याएं विद्यमान हैं जिनको निम्न प्रकार स्पष्ट किया गया है–

1– शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण एवं रोजगार परक बनाने हेतु संसाधनों की आपूर्ति करना
2– आधुनिक आवश्यकता अनुरूप व्यवसायिक पाठ्यक्रमों का निर्माण करना
3– शैक्षिक तकनीकी विशेषज्ञ की उपलब्धता
4 –गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य को प्रोत्साहन देना
5– 2035 तक सकल नामांकन अनुपात 50 प्रतिशत करना
6–शिक्षा को छात्र केंद्रित बनाना
7–बजट का 6 प्रतिशत शिक्षा हेतु विनियोग
8–शिक्षको को तकनीकी संसाधनो के प्रयोग हेतु प्रशिक्षित करना
9–ई विषयवस्तु का निर्माण करना
10–संस्थागत पुनर्गठन करना
11–सूचना व तकनीकी संसाधनो को उपलब्ध करना
12–शिक्षा व तकनीक का एकीकरण करना
14–दिव्यांग बालको को समान अवसर हेतु संसाधन उपलब्ध कराना
15–त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से शिक्षा का संस्कृतिकरण करना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रासंगिकता –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आधुनिक भारत की शिक्षा नीति है। यह नीति वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली को आधुनिकतम बनाने के साथ–साथ तात्कालिक समय की मांगों और आवश्यकताओं के साथ भविष्य की आकांक्षाओ की पूर्ति करने का प्रयास करती है। यह नीति उच्चतर शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, और सामाजिक और राजनीतिक मानदंडों के साथ–साथ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा प्रक्रिया और पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के जीवन से संबंधित रखा गया है और उनके सामरिक, आर्थिक, सामाजिक, और व्यावसायिक विकास को समर्थन किया गया है। इस नीति का उद्देश्य शिक्षा को व्यवहारिक और अद्यतन करके छात्रों को वास्तविक जीवन में सफलता प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करना है। चॅकि सभी को नौकरी प्रदान करना संभव नहीं है इसलिये किस प्रकार जनता को मानव पूंजी के रूप में परिणत किया जाये इसके लिये शिक्षा में उपयुक्त व्यावसायिक पाठयक्रमों को सम्मिलित किया गया है। शिक्षा के माध्यम से कौशल विकसित कर छात्र अपना जीवन यापन करने योग्य होगा और साथ ही देश की आर्थिक उन्नति में भी सहायता करेगा।



समावेशी शिक्षा के महत्व को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में केंद्रीय हिंदी के बिंदु के रूप में रखा गया है जिसमें पीडब्ल्यूडी एक्ट 2016 के प्रावधानों को अपनाया गया है। वर्तमान शिक्षा नीति में विभिन्न दिव्यांग संगठन द्वारा दी गई विभिन्न सिफारिशों को भी सम्मिलित किया गया है जो विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को इस शिक्षा व्यवस्था में और बेहतर एवं समान अवसर प्रदान करेंगे। सहानुभूति, लैंगिक समानता, मानव अधिकार, सहिष्णुता, आदि जैसे नैतिक मूल्य इस शिक्षा नीति का प्रमुख बिंदु है जिसके माध्यम से भारतीय संस्कृति विरासत और प्राचीन ज्ञान प्रणाली को महत्व दिया गया है।

यह शिक्षा नीति अर्ली चाइल्डहुड केयर एवं एजुकेशन को भी महत्व देती है। बालक के विकास में प्रथम 5 वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण हैं इसी समय में बालक के व्यक्तित्व की आधारशिला तैयार होती है इसीलिये इसमें माता– पिता एवं समुदाय की भागीदारी को भी महत्व दिया गया है।यह नीति भारतीय शिक्षा प्रणाली पर विशेष ध्यान देती है, जिसमें प्रयोगात्मक और अभ्यासक्रम की प्रमुखता होती है जो छात्रों के रुचि और उनकी जरूरतों के अनुरूप होती है। इसके साथ ही, नीति शिक्षा को इंटरडिसिप्लिनरी बनाने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में विचार करने, जोड़ने और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता प्राप्त होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा प्रदान करने के लिए नई तकनीकों और इंटरनेट के उपयोग को बढ़ावा दिया गया है। इससे शिक्षार्थियों को दूरस्थ शिक्षा की सुविधा मिलती है और उन्हें ग्लोबल स्तर पर अद्यतित और नवीनतम ज्ञान से परिचित किया जा सकता है। इस नीति के अनुसार शिक्षा को छात्र के पास प्रभावपूर्ण रूप में पहुॅचाना है जिसके लिये तकनीकी आधारित शिक्षा को प्रोत्साहन दिया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से शिक्षा प्रणाली को आधुनिक विशेषताओं से युक्त बनाने का प्रयास किया गया है। इससे विद्यार्थियों को आवश्यक कौशल, ज्ञान, और दक्षता प्राप्त करने में सहायता मिलेगी और उन्हें वास्तविक जीवन में सफलता प्राप्त करने में सहायक होगी। यह नीति शिक्षा के भारतीयकरण पर बल देती है जिसमें शिक्षा हेतु क्षेत्रीय एवं मातृभाषा का महत्व दिया गया हैं। नई शिक्षा नीति के अनुसार बडी संख्या में भाषा शिक्षको की आवश्यकता होगी विशेषरूप से आठवीं अनुसूची में वार्णित सभी भाषाओ के लिये शिक्षको की आवश्यकता होगी।त्रिभाषा सूत्र के अनुरूप शिक्षको की नियुक्ति हेतु एवं भारतीय भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करने हेतु राज्य सरकारें आपस में समझौता कर सकती है। भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में उच्च गुणवत्तापूर्ण विषय वस्तु उपलब्ध कराने हेतु इंस्टीटयूट ऑफ ट्रांसलेशन एण्ड इंटरप्रिटेशन की स्थापना की जायेगी। इस शिक्षा नीति के माध्यम से बच्चें को भारत के गौरवशाली इतिहास से परिचित कराया जायेगा जिसके माध्यम से बच्चें में भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न हो और वह भारतीय मूल्यों एवं आदर्शो के पालन करने को तैयार हो। इस प्रकार यह नवीन शिक्षा नीति भारतीयता से ओतप्रोत है जो भारत को आत्मनिर्भर भारत बनाने के साथ उसे अपने पुरातन मूल्यों एवं आदर्शो से जोडने का कार्य करेगी।

संदर्भ सूचीः–

Manoj, Ambika (2021): National Education Policy-2020: Issues and Challenges in implementation. University news Vol.59, no-5, April 12-18. p.146.

Phene, Aniruddha (2021). *The Impact of National Education Policy on Professional Education.* https://www.highereducationdigest.com/the-impact-of-national-education-policy-2020-on-professional-education/

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* नई दिल्ली, भारतः शिक्षा मंत्रालय.

सरकारी उपक्रम, भारत. (2020). *नई शिक्षा नीति 2020: दस्तावेज.* नई दिल्ली, भारतः लोक सेवा आयोग.

शिक्षा नीति आयोग. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* नई दिल्ली, भारतः शिक्षा नीति आयोग.

भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* नई दिल्ली, भारतः वित्त मंत्रालय.

How to cite reference of this paper-

वर्मा, एम. (2023). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक अध्ययन. *Educational Metamorphosis, 2*(1), 149-154.